Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-10 | October-2024 | Page 133-137

द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' के साहित्य में सामाजिक यथार्थ और जनचेतना

[1]सुष्मिता मिश्रा, [2]डॉ. अजय कुमार शुक्ल
[1]शोध विद्यार्थी, [2]प्राध्यापक (हिन्दी)
[1,2]कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर (छत्तीसगढ़)
[2]ajay.shukla@kalingauniversity.ac.in

शोध सारांश -

द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' ने छत्तीसगढ़ी साहित्य में समाज की पीड़ा को भाषा दी और लोकजीवन को साहित्यिक गरिमा प्रदान की।उनकी रचनाओं में छत्तीसगढ़ के लोकजीवन का चित्र दिखलाई पड़ता है। जहां पर छत्तीसगढ़ के जनजीवन का सामाजिक यथार्थ प्रतिबिंबित होता है।विप्र ने अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक सुधार के साथ साथ जनचेतना के विस्तार के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया है।

बीज बिन्दु - लोकजीवन, लोकभाषा, सामाजिक यथार्थ, समाज सुधार, जनचेतना

प्रस्तावना -

छत्तीसगढ़ी साहित्य में द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' का नाम लोकसंवेदना और सामाजिक यथार्थ के सशक्त प्रतिनिधि के रूप में लिया जाता है। उन्होंने छत्तीसगढ़ी भाषा को साहित्यिक स्तर पर प्रतिष्ठित किया। उनके साहित्य में लोकजीवन की सादगी, ग्राम्य-संस्कृति की आस्था, और सामाजिक विषमताओं के विरुद्ध एक सजग दृष्टि दिखाई देती है। 'विप्र' के लेखन में छत्तीसगढ़ की धरती की गंध, लोकगीतों की लय और समाज के भीतर चल रहे परिवर्तन की झंकार मिलती है।इस शोध का उद्देश्य 'विप्र' के साहित्य में सामाजिक यथार्थ और जनचेतना के विविध रूपों का विश्लेषण करना है कि किस प्रकार उन्होंने लोकभाषा के माध्यम से समाज-सुधार, समानता और नैतिकता की भावना को प्रकट किया।

1. साहित्यिक परिचय -

द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' छत्तीसगढ़ी साहित्य के आधुनिक युग के प्रमुख कवि एवं गीतकार थे। उनका जन्म 6 जुलाई 1908 को बिलासपुर के जूना क्षेत्र में हुआ था। पिता का नाम पं. नान्हूराम तिवारी और माता का नाम देवकी देवी था। वे दो भाई-बहनों में मंझले थे। प्रारंभिक

शिक्षा के बाद उन्होंने ब्रजभाषा एवं खड़ी बोली में रचना की, किंतु छत्तीसगढ़ी लोक परंपराओं एवं लोकगीतों की ओर आकर्षित होकर छत्तीसगढ़ी में लेखन आरंभ किया। 1934 में उनकी पहली छत्तीसगढ़ी पुस्तिका 'कुछू कांही' प्रकाशित हुई, जिसमें मात्र 10 गीत थे, जो लोकगीत शैली में सामाजिक एवं भावनात्मक विषयों पर आधारित थे। वे स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े रहे और उनकी रचनाएँ जनजागरण का माध्यम बनीं। उनका निधन 1962 में हुआ।। बाल्यावस्था से ही वे लोककला, गीत-नाट्य और समाजसेवा के प्रति आकर्षित थे। शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात उन्होंने सामाजिक और साहित्यिक क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभाई।उनका लेखन छत्तीसगढ़ी भाषा की मूल चेतना से जुड़ा है। उन्होंने कविता, लघुकथा, गीत और निबंध सभी रूपों में लेखन किया।

2.प्रमुख कृतियाँ -

'विप्र' जी की रचनाएँ मुख्यतः गीत, काव्य एवं जीवनी-आधारित हैं, जो छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य से प्रेरित हैं। निम्न तालिका में उनकी प्रमुख प्रकाशित कृतियाँ सूचीबद्ध हैं:

क्रमांक	कृति का नाम	प्रकाशन वर्ष (लगभग)	विधा
1	कूठू कांही	1934	गीत संग्रह
2	राम अऊ केवट संग्रह	–	काव्य
3	काँग्रेस विजय आल्हा	–	देशभक्ति गीत
4	शिव-स्तुति	–	भक्तिक काव्य
5	गाँधी गीत	–	देशभक्ति गीत
6	फागुन गीत	1968	लोक गीत
7	डबकत गीत	1968	लोक गीत
8	सूराज गीता	1948 (प्र.सं.), 1958 (द्वि.सं.)	सामाजिक गीत
9	क्रांति प्रवेश	–	क्रांतिकारी काव्य
10	पंचवर्षीय योजना गीत	1960–61	विकास गीत
11	गोस्वामी तुलसीदास (जीवनी)	–	जीवनी
12	महाकवि कालिदास कीर्ति	–	जीवनी
13	छत्तीसगढ़ी साहित्य को डॉ. विनय पाठक की देन	–	

ये कृतियाँ लोकभाषा में लिखी गईं, जो ग्रामीण जनता तक पहुँचने में सहायक रहीं।विप्र' ने लोकजीवन को केवल वर्णित नहीं किया, बल्कि उसके अंतर्विरोधों और परिवर्तन की संभावनाओं को भी रेखांकित किया। उनका साहित्य लोकस्मृति का दस्तावेज़ है।

ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-10 | October-2024 | Page 133-137

3.'विप्र' के साहित्य में सामाजिक यथार्थ -

'विप्र' के साहित्य की मूल संवेदना सामाजिक यथार्थ है। उन्होंने समाज की वास्तविकताओं–गरीबी, श्रम, विषमता, अन्याय और मानवीय संघर्ष–को बिना अलंकरण के व्यक्त किया।उनकी कविताओं में किसान-मजदूर की व्यथा, दलित-वंचित वर्ग की पीड़ा और स्त्रियों की स्थिति का गहन चित्रण मिलता है।वे किसी विचारधारा के अनुयायी नहीं थे, परंतु उनकी दृष्टि मानवीय थी।

"धरती लहू माँगे, गाड़े हे हल के फाल,
मनखे के पसीना ले भी न हँसे हे काल।"

उनकी कविताओं की यह पंक्तियाँ सामाजिक आर्थिक यथार्थ को उद्घाटित करती हैं।'विप्र' ने शोषित वर्ग के संघर्ष को केवल करुण दृष्टि से नहीं, बल्कि परिवर्तन की संभावनाओं के साथ प्रस्तुत किया।

इसी प्रकार 'सुराज गीता' अच्छे शासन (सुराज) की अवधारणा पर आधारित है, जिसमें भ्रष्टाचार, गरीबी एवं सामाजिक अन्याय का चित्रण है। लोकगीतों के माध्यम से यह ग्रामीण समाज में नैतिक जागरण पैदा करती है

उनकी कृति 'फागुन गीत' एवं 'डबकत गीत' में छत्तीसगढ़ी लोक उत्सवों (फागुन एवं डबकत) के माध्यम से दैनिक जीवन के संघर्षों–जैसे कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था, लैंगिक असमानता एवं रीति-रिवाजों–का यथार्थ चित्रण दिखलाई पड़ता हैं। इनमें हास्य-व्यंग्य का प्रयोग कर सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया गया है।

इसी प्रकार उनकी रचना 'धमनी हाट तोला' में ग्रामीण बाजार के दृश्यों के जरिए आर्थिक असमानता एवं व्यापारिक शोषण का वर्णन है, जो जनचेतना को आर्थिक स्वावलंबन की ओर प्रेरित करता है।

4.'विप्र' की रचनाओं में जनचेतना और समाज-सुधार की भावना-

'विप्र' छत्तीसगढ़ी समाज के जनकवि हैं। उनकी रचनाओं में जनचेतना का स्वर स्पष्ट सुनाई देता है।वे केवल समाज का वर्णन नहीं करते, बल्कि उसे जाग्रत करने का कार्य करते हैं।उनकी कविताएँ समानता, शिक्षा, स्त्री-स्वतंत्रता, जातीय समरसता और श्रम-सम्मान की वकालत करती हैं।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-10 | October-2024 | Page 133-137

‘विप्र’ का मानना था कि जनचेतना का प्रसार तभी संभव है जब लोकभाषा को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया जाए। इसीलिए उन्होंने छत्तीसगढ़ी को अपनी कविताओं का आधार बनाया।उनके साहित्य में गांधीवादी मूल्यों और मानवीय नैतिकता की झलक भी मिलती है–वे हिंसा, विभाजन और लोभ-लालच के विरोधी थे।उनकी कविताएँ पाठक को सोचने और समाज के प्रति उत्तरदायी बनने के लिए प्रेरित करती हैं।

उनकी प्रसिद्ध रचना 'पंचवर्षीय योजना गीत' स्वतंत्र भारत की विकास योजनाओं को लोकभाषा में प्रस्तुत करता है, जिसमें सिंचाई, शिक्षा एवं स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर फोकस किया गया है। यह रचना ग्रामीण जनता में आर्थिक प्रगति की चेतना जगाती है, जो सामाजिक यथार्थ की चुनौतियों (गरीबी, अशिक्षा) से जूझती दिखती है।
‘विप्र’ जी की रचनाएँ छत्तीसगढ़ी साहित्य को लोक-केंद्रित बनाती हैं, जहाँ सामाजिक यथार्थ को जनचेतना के साथ जोड़ा गया है। डॉ. सत्यभामा आड़िल जैसे आलोचकों ने इन्हें आधुनिक छत्तीसगढ़ी गीत का आधार माना है। उनकी कविताओं और गीत में सरलता और भावप्रवणता,यथार्थवादी चित्रण,लोकधर्मी शब्दावली,नवजागरण की चेतना मुख्य हैं।

निष्कर्ष -

द्वारिका प्रसाद तिवारी ‘विप्र’ छत्तीसगढ़ी साहित्य के ऐसे कवि हैं जिन्होंने लोकजीवन की सच्चाई को आत्मीयता से व्यक्त किया।उनकी रचनाएँ जनमानस को आत्म-पहचान और समाज-सुधार की प्रेरणा देती हैं।उनके साहित्य में सामाजिक विषमता के विरोध के साथ लोकगौरव और मानवीय मूल्य का सम्मान है।इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि ‘विप्र’ का साहित्य छत्तीसगढ़ी समाज की सामाजिक संरचना का दर्पण है।उनकी रचनाओं में यथार्थ और चेतना का संगम है।वे छत्तीसगढ़ी कविता को जनजीवन से जोड़ने वाले सेतु हैं।उनका साहित्य आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि उसमें लोकभाषा की ऊर्जा और सामाजिक परिवर्तन का संदेश निहित है।

ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-10 | October-2024 | Page 133-137

संदर्भ-ग्रंथ सूची-

1.तिवारी, द्वारिका प्रसाद 'विप्र' - चयनित कविताएँ (प्रकाशित संकलन)।

2.तिवारी, द्वारिका प्रसाद 'विप्र'। माटी के गीत। रायपुर: लोकभारती प्रकाशन, 1987।

3.तिवारी, द्वारिका प्रसाद 'विप्र'। लोकमाटी। बिलासपुर: साहित्य सागर, 1992।

4.चतुर्वेदी, प्रभाकर। छत्तीसगढ़ का लोकजीवन और साहित्य। नई दिल्ली: भारतीय विद्या भवन, 2001।

5.वर्मा, गोविंद। लोकसंस्कृति के दर्पण में छत्तीसगढ़। रायपुर: नवरंग प्रकाशन, 2010।

6.जोशी, रमाशंकर। आंचलिक साहित्यकार द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र'। दुर्ग: संस्कार प्रकाशन, 2016।

7.छत्तीसगढ़ी साहित्य का इतिहास (ग्रंथालय प्रकाशन)।

8.इंटरनेट के माध्यम से सोशल मीडिया पर उपलब्ध सामग्री।

9.वर्मा, काशीनाथ - छत्तीसगढ़ी साहित्य का इतिहास, रायपुर : लोकभारती प्रकाशन।

10.देशमुख, रामचंद्र - छत्तीसगढ़ी काव्य की प्रवृत्तियाँ, बिलासपुर : साहित्य सदन।

11.पाठक, विनय कुमार - लोक संस्कृति और छत्तीसगढ़ी साहित्य, दुर्ग : चेतना प्रकाशन।

12.छत्तीसगढ़ मित्र, लोकवाणी, माटी के बोल - विभिन्न अंक।